③ भ्रमणात्मक विधि :-

वास्तव में निरीक्षणात्मक विधि और भ्रमणात्मक विधि में घनिष्ठ सम्बन्ध है। दूसरे शब्दों में, निरीक्षणात्मक विधि का ही विस्तृत रूप भ्रमणात्मक विधि है। इस विधि में विद्यार्थियों को कक्षा भवन से बाहर ले जाकर भूगोल का अध्ययन कराया जाता है। छात्र प्रकृति के सम्पर्क में आते हैं और वस्तुओं को कृत्रिमता के आवरण से रहित स्वाभाविक रूप में देखते हैं। अध्यापक और छात्र वास्तविकता से सीधा सम्पर्क स्थापित कर ज्ञान प्राप्त करते हैं। छात्रों की रुचि, आयु और शिक्षा-स्तरों का ध्यान रखकर वास्तविक ज्ञान प्राप्त कराने में इस विधि का उपयोग किया जा सकता है।

जेम्स फेयरग्रीव के कथनानुसार "वस्तुओं के सही निरीक्षण के ऊपर ही भूगोल का वास्तविक ज्ञान आधारित है। ऐसे भौगोलिक भ्रमणों द्वारा भूगोल-शिक्षण में रोचकता आती है। भूगोल का अधिकांश भाग मस्तिष्क की अपेक्षा पैरों द्वारा सीखा जाता है।"

प्रारम्भिक कक्षाओं में स्कूल की समीपवर्ती स्थानीय दशाओं का निरीक्षण कराया जा सकता है। मौसम, भूमि, माप, यातायात, सड़क, बाजार तथा आसपास रहने वाले लोगों के उद्यम के विषय में अध्ययन कराया जा सकता है। दूर की यात्रा में विभिन्न स्थानों में पायी जाने वाली भौगोलिक विभिन्नता पर ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। इन परिभ्रमणों में स्वयं छात्र चीजों को देखते हैं, प्रकृति से सम्बन्धित क्रियाएँ निरीक्षण द्वारा ही छात्र उत्तम प्रकार से जान सकते हैं। इस प्रकार भूगोल विषय का प्राप्त किया हुआ ज्ञान पूर्ण और स्थायी होता है तथा छात्रों को प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण का पूर्ण ज्ञान होता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

भ्रमणों द्वारा छात्र अपनी रुचि तथा जिज्ञासा के अनुसार अपने भावों के प्रकाशन के लिए पूर्ण अवसर पाते हैं। वस्तुओं के निरन्तर निरीक्षण द्वारा भौगोलिक तथ्यों को छानबीन लेते हैं। कल्पना, निर्णय तथा तर्क-शक्तियों का पूर्ण विकास भी होता है। छात्रों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है। भौगोलिक पर्यटन द्वारा भूगोल की शिक्षा रुचिकर, सजीवतापूर्ण तथा स्थायी बनायी जा सकती है।

भूगोल-शिक्षक को इस विधि से भूगोल पढ़ाते समय कई बातों का ध्यान रखना चाहिए। भ्रमण के लिए समय सीमित होता है, इसलिए जो कुछ भी समय हो, शिक्षक को उसका अधिक से अधिक सदुपयोग करना चाहिए। अध्यापक को पहले ही जाकर महत्त्वपूर्ण निरीक्षण योग्य बातों का चयन कर लेना चाहिए कहने का अर्थ यह है कि शिक्षक को सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यन्त सावधानी से निश्चित कर लेना चाहिए। भौगोलिक दृष्टिकोण के महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक, आर्थिक, व्यावसायिक, सामाजिक तथ्यों का अध्ययन इस विधि द्वारा अच्छी प्रकार किया जा सकता है और साथ ही विद्यार्थियों के चारित्रिक एवं सामाजिक गुणों का उचित विकास भी हो सकता है।

इस विधि की सफलता के लिए आवश्यक है कि अध्यापक स्वयं पर्यटन-प्रेमी, उत्साही तथा निर्भीक हो और छात्रों को निरीक्षण के पश्चात् भौगोलिक सिद्धान्तों के निकालने का आदेश दे तथा इसी विषय पर लेख लिखाए जायें। भ्रमण के समय भौगोलिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण खनिज-पदार्थ, वनस्पति, चट्टानों के छोटे-2 टुकड़े भी छात्रों को एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, इन सभी सामग्री को भूगोल-कक्षा में सुरक्षित रखना चाहिए। अध्यापक का कर्तव्य है कि वह छात्रों की सुरक्षा का ध्यान रखे।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

23-9-2020